पाठ 3. सादगी की मूरत

पाठ का उद्‌देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्‌देश्य डॉ॰ राजेंद्र प्रसाद के व्यक्तित्व से परिचित करवाते हुए जीवन में मानवीय मूल्यों तथा कर्तव्यों को सर्वोपरि रखने की सीख देना है।

पाठ का सारांश

पटना में महादेवी वर्मा (लेखिका) की मुलाकात राजेंद्र बाबू से होती है। लेखिका कहती हैं कि राजेंद्र बाबू का पहनावा बिलकुल सीधा-सादा था। वे एक सामान्य भारतीय जन की भाँति ही दिखते थे तथा रहन-सहन में भारतीय कृषक का ही प्रतिनिधित्व करते थे। राजेंद्र बाबू के समान ही उनकी धर्मपत्नी का व्यक्तित्व भी अत्यंत सादगीपूर्ण था। एक राष्ट्रपति की पत्नी होने का उन्हें ज़रा-सा भी अहंकार नहीं था। वे सभी के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार रखतीं। राष्ट्रपति भवन में रहने पर भी वे स्वयं भोजन बनाती थीं। राजेंद्र बाबू की पत्नी द्‌वारा लेखिका से सूप मँगवाने की घटना का भी रोचक वर्णन किया गया है। राजेंद्र बाबू तथा उनकी सहधर्मिणी सप्ताह में एक दिन अन्न ग्रहण नहीं करते थे। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ॰ राजेंद्र प्रसाद का जीवन सभी के लिए प्रेरणादायी है।

अध्यापन संकेत

पाठ वाचन से पूर्व **पठन-पूर्व चर्चा** में पूछे प्रश्नों पर बच्चों से चर्चा करें। बच्चों से पाठ का वाचन करवाएँ। महत्त्वपूर्ण अनुच्छेदों को बच्चों को समझाएँ। बच्चों को राजेंद्र प्रसाद जी के बारे में बताएँ। बताएँ कि वे भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे। समझाएँ कि आप सभी को अपने कर्तव्यों का बोध होना चाहिए।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें –

- ‘सादा जीवन उच्च विचार’ से आप क्या समझते हो?
- राजेंद्र बाबू को ‘देशरत्न’ की उपाधि दी गई थी। ऐसी ही कुछ उपाधियाँ जैसे – ‘लोकमान्य’, ‘सरदार’, ‘महात्मा’, ‘लोकनायक’, ‘देशबंधु’, ‘गुरुदेव’ आदि हैं। बताइए, ये उपाधियाँ किन महान विभूतियों को दी गई हैं।
- ‘भारत रत्न’ का सम्मान किन्हें दिया जाता है? आपकी जानकारी में यह सम्मान दिए जाने का क्या विशेष मानदंड होता है?
- यह सम्मान किसके द्‌वारा दिया जाता है तथा इसके अंतर्गत क्या-क्या दिया जाता है? (उदाहरण के लिए मेडल, प्रशस्ति पत्र, शॉल आदि) बच्चों से पूछें।

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्‌यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।